पच्चुप्पन्नवत्थु

सो किर सत्थारा "सच्चं किर, त्वं भिक्खु, उक्कण्ठितो"ति पुट्ठो 'सच्चं, भन्ते"ति वत्वा "किं कारणा"ति वुत्ते "एकं अलङ्कतइत्थिं दिस्वा किलेसवसेना"ति आह। अथ नं सत्था "मातुगामो नाम भिक्खु न सक्का रक्खितुं, पुब्बेपि दोवारिके ठपेत्वा रक्खन्तापि रक्खितुं न सक्खिंसु, किं ते इत्थिया, लद्धापि सा रक्खितुं न सक्का"ति वत्वा अतीतं आहरि।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो सुवयोनियं निब्बत्ति, "राधो"तिस्स नामं, कनिट्ठभाता पनस्स पोट्ठपादो नाम। ते उभोपि तरुणकालेयेव एको लुद्दको गहेत्वा बाराणसियं अञ्ञतस्स ब्राह्मणस्स अदासि, ब्राह्मणो ते पुत्तट्ठाने ठपेत्वा पटिजग्गि। ब्राह्मणस्स पन ब्राह्मणी अरक्खिता दुस्सीला। सो वोहारकरणत्थाय गच्छन्तो ते सुवपोतके आमन्तेत्वा "ताता, अहं वोहारकरणत्थाय गच्छामि, काले वा विकाले वा तुम्हाकं मातु करणकम्मं ओलोकेय्याथ, अञ्ञस्स पुरिसस्स गमनभावं वा अगमनभावं वा जानेय्याथा"ति ब्राह्मणिं सुवपोतकानं पटिच्छापेत्वा अगमासि। सा तस्स निक्खन्तकालतो पट्ठाय अनाचारं चरि, रत्तिम्पि दिवापि आगच्छन्तानञ्च गच्छन्तानञ्च पमाणं नत्थि।

तं दिस्वा पोट्ठपादो राधं पुच्छि–"ब्राह्मणो इमं ब्राह्मणिं अम्हाकं निय्यादेत्वा गतो, अयञ्च पापकम्मं करोति, वदामि न"न्ति। राधो "मा वदाही"ति आह। सो तस्स वचनं अग्गहेत्वा "अम्म, किंकारणा पापकम्मं करोसी"ति आह।

क. वर्तमान कथा

शास्ता ने पूछा–"भिक्षु, क्या तुम सचमुच उत्कण्ठित हो?" "भन्ते! सचमुच।" "किस कारण से?" "एक अलङ्कृत स्त्री को देखकर कामुकता के कारण।" "भिक्षु, स्त्री-जाति की सँभाल नहीं की जा सकती (रक्षा-व्यवस्था करना कठिन है)। पूर्व समय में द्वारपाल रखकर रक्षा-प्रबन्ध करने वाले भी रक्षित नहीं कर सके। तुम्हें स्त्री से क्या प्रयोजन? मिलने पर भी उनकी रक्षा नहीं की जा सकती।" इतना कह शास्ता ने पूर्व जन्म की कथा कही–

ख. अतीत कथा

पूर्व समय में वाराणसी-नृप ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय बोधिसत्व तोते की योनि में पैदा हुए। उनका नाम था राध। उनके छोटे भाई का नाम था पोट्ठपाद। एक व्याध ने जब वह छोटे थे दोनों ही को पकड़ कर वाराणसी के एक ब्राह्मण को दिया। ब्राह्मण ने उन्हें पुत्र की तरह पाला। उसकी ब्राह्मणी दुराचारिणी थी उसकी सुरक्षा नहीं की जा सकती थी। ब्राह्मण ने व्यापार करने के लिए जाते समय उन तोते बच्चों को बुलाकर कहा–"तात! मैं व्यापार के लिए जाता हूँ। समय-असमय तुम अपनी माता की करनी पर सावधानी रखना। दूसरे जन का अन्दर आना-जाना देखना" इस प्रकार वह उन तोते-बच्चों को ब्राह्मणी सौंप कर गया। वह (ब्राह्मणी) उसके बाहर जाने के समय से ही अनाचार करने लगी। रात को भी, दिन को भी आने-जाने वालों की सीमा न रही।

सा तं मारेतुकामा हुत्वा "तात, त्वं नाम मय्हं पुत्तो, इतो पट्ठाय न करिस्सामि, एहि, तात तावा"ति पियायमाना विय पक्कोसित्वा आगतं गहेत्वा "त्वं मं ओवदसि, अत्तनो पमाणं न जानासी"ति गीवं परिवत्तेत्वा मारेत्वा उद्धनन्तरेसु पक्खिपि। ब्राह्मणो आगन्त्वा विस्समित्वा बोधिसत्तं "किं, तात राध, माता ते अनाचारं करोति, न करोति"ति पुच्छन्तो पठमं गाथमाह—

"पवासा आगतो तात, इदानि नचिरागतो। कच्चिन्नु तात ते माता, न अञ्ञमुपसेवती"ति ।।

तस्सत्थो—अहं, तात राध, पवासा आगतो, सो चम्हि इदानेव आगतो नचिरागतो, तेन पवत्तिं अजानन्तो तं पुच्छामि—"कच्चि नु ते, माता अञ्ञं पुरिसं न उपसेवती"ति।

राधो "तात, पण्डिता नाम भूतं वा अभूतं वा अनिय्यानिकं नाम न कथेसु"न्ति आपेन्तो दुतियं गाथमाह—

"नं खो पनेतं सुभणं, गिरं सच्चुपसंहितं। सयेथ पोट्ठपादोव, मुम्मुरे उपकूथितो"ति ।।

तत्थ गिरन्ति वचनं। तञ्हि यथा इदानि गिरा, एवं तदा "गिर"न्ति वुच्चति, सो सुवपोतको लिङ्गं अनादियित्वा एवमाह। अयं पनेत्थ अत्थो—ताता, पण्डितेन नाम सच्चुपसंहितं यथाभूतं अत्थयुत्तं सभाववचनम्पि अनिय्यानिकं न सुभणं। अनिय्यानिकञ्च सच्चं भणन्तो **सयेथ पोट्ठपादोव, मुम्मरे उपकूथितो**, यथा पोट्ठपादो कुक्कुळे झामो सयति, एवं सयेय्याति। "उपकूधितो"तिपि पाठो, अयमेवत्थो।

एवं बोधिसत्तो ब्राह्मणस्स धम्मं देसेत्वा "मयापि इमस्मिं ठाने वसितुं न सक्का"ति ब्राह्मणं आपुच्छित्वा अरञ्ञमेव पाविसि।

उसे देख पीट्ठपाद ने राध से कहा–"ब्राह्मण इस ब्राह्मणी को हमें सौंप कर गया। यह पाप-कर्म करती है। मैं इसे मना करूँ?" राध ने कहा–"मत बोल।" वह उसका कहना न मान बोला–"अम्म! तुम पापकर्म किसलिए (क्यों) करती हो?" उसने उसे मार डालने की इच्छा से कहा–"तात राध! तुम मेरे पुत्र हो। अब न करूँगी। जरा, यहाँ आ।" इस प्रकार प्यार करती हुई-सी उसे बुलाकर, आने पर पकड़ लिया। फिर 'तुम मुझे उपदेश देते हो, अपनी हैसियत नहीं देखते?' कह, गरदन मरोड़ मारकर चूल्हे में फेंक दिया। ब्राह्मण ने लौट कर, विश्राम ले बोधिसत्व से कहा–"तात राध! तुम्हारी माता अनाचार करती थी अथवा नहीं ?" पूछते हुए यह पहली गाथा कही–

तात! मैं अब प्रवास से लौट आया हूँ। मैं अभी आ रहा हूँ। तात! क्या तुम्हारी माता दूसरे पुरुष का सेवन करती थी?

मैं तात पवासा आगतोति–वह मैं अभी आया हूँ। **न चिरागतोति**–इसीसे समाचार न जानने के कारण पूछता हूँ। **कच्चिन्न ताता ते माता अञ्ञं** पुरुष को न उपसेवति? क्या तुम्हारी माता पर-पुरुष का सेवन करती थी?

राध ने 'तात! पण्डित सत्य या असत्य कल्याणकर बात कभी नहीं कहते' प्रकट करते हुए दूसरी गाथा कही–

वह सच्ची बात सुभाषित वाणी नहीं हैं; जिसके कहने से पोट्ठपाद की भांति गर्म राख में भुने।

गिरं वचनंति–वचन को ही जैसे अब 'गिरा' कहते हैं; वैसे ही तब 'गिर' कहते थे। तोता-बच्चा लिंङ्ग का विचार न कर ऐसा कहता है। लेकिन इसका अर्थ यह है–तात! पण्डित द्वारा सच्ची, यथार्थ, तथ्य-युक्त स्वाभाविक बात भी अकल्याणकर होने से; **न सुभणं**, अकल्याणकर सच्ची बात कहने से **सयेथ पोट्ठपादोव मुम्मरे उपकूथितोति**–जैसे पीट्ठपाद गरम राख में भुना हुआ सोता है; उस प्रकार सोये। **उपकूधितो** पाठ का भी यही अर्थ है।

इस प्रकार बोधिसत्व ब्राह्मण को धर्मोपदेश दे 'मैं भी यहाँ नहीं रह सकता' कह जंगल में चला गया।

सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा जातकं समोधानेसि, सच्चपरियोसाने उक्कण्ठितभिक्खु सोतापत्तिफले पतिट्ठहि। "तदा पोट्ठपादो आनन्दो अहोसि, राधो पन अहमेव अहोसि"न्ति।

राधजातकं

●

९. गहपतिजातकं

उभयं मे न खमतीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो उक्कण्ठितमेव भिक्खुं आरब्भ कथेसि।

पच्चुप्पन्नवत्थु

कथेन्तो च "मातुगामो नाम अरक्खितो, पापकम्मं कत्वा येन केनचि उपायेन सामिकं वञ्चेतियेवा"ति वत्वा अतीतं आहरि।

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो कासिरट्ठे गहपतिकुले निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो घरावासं गण्हि। तस्स भरिया दुस्सीला गामभोजकेन सद्धिं अनाचारं चरति। बोधिसत्तो तं ञत्वा परिग्गण्हन्तो चरति। तदा पन अन्तोवस्से बीजेसु नीहटेसु छातकं अहोसि, सस्सानं गब्भगहणकालो जातो। सकलगामवासिनो "इतो मासद्वयेन सस्सानि उद्धरित्वा वीहिं दस्सामा"ति एकतो हुत्वा गामभोजकस्स हत्थतो एकं जरगोणं गहेत्वा मंसं खादिंसु।

शास्ता ने यह धर्मदेशना कह (आर्य-) सत्यों को प्रकाशित कर जातक का परिणाम संघटित किया। सत्यों (का प्रकाशन) समाप्त होने पर उत्कण्ठित भिक्षु स्रोतापत्ति फल में प्रतिष्ठित हो गया। उस समय पोट्ठपाद आनन्द था। राध तो मैं ही था।

राध जातक

●

१९९. गहपति जातक

"उभयम्मेन खमतीति-....." यह (गाथा) भी शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय उत्कण्ठित-चित्त एक भिक्षु के विषय में कही।

क. वर्तमान कथा

यह कथा कहते हुए शास्ता ने 'स्त्री जाति की सुरक्षा नहीं हो सकती। जिस किसी उपाय से पाप करके स्वामी को ठगती ही हैं' कह पूर्व-जन्म की कथा कही।

ख. अतीत कथा

पूर्व काल में वाराणसी-नृप ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय बोधिसत्व ने काशी-राष्ट्र के गृहपति-कुल में जन्म ग्रहण कर बड़े होने पर विवाह किया। उसकी भार्या दुराचारिणी थी; गाँव के मुखिया के साथ दुराचार करती। बोधिसत्व यह जानकर परीक्षा करते हुए रहने लगे। उस समय वर्षा काल में बीजों के बह जाने से अकाल पड़ गया था। खेती में दाना पड़ा। सभी ग्रामवासियों ने मिलकर निश्चय किया कि अब दो महीने बाद खेत काटकर धान दे देंगे; और गाँव के मुखिया से एक बूढ़ा बैल ले उसका माँस खा गये।